जगदीश राय कुलरियाँ

पंजाबी लघुकथा : कल, आज और कल

लघुकथा को पंजाबी भाषा में 'मिन्नी कहानी' कहते हैं। कई विद्वान प्राचीन जन्म साखियों, जातक कथाओं, बौद्ध कथाओं, हितोपदेश व पंचतंत्र की कहानियों अथवा प्राचीन धार्मिक ग्रंथों की उपदेशात्मक व नीति कथाओं में इसके बीज खोजने की बात करते हैं। किसी विधा के विस्तार, उसके लोकप्रिय होने अथवा साहित्य का हिस्सा बनने के लिए जब कोई नियम तय किए जाते हैं तो स्वाभाविक है कि ये सारी बातें शोध का विषय बनती हैं और बननी भी चाहिए।

कुछ विद्वान पंजाबी लघुकथा के बीज को अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में लगभग 1710 से 1735 तक लिखी गई भाई मनी सिंह की पुस्तकों 'ज्ञान रत्नावली' और 'भगत रत्नावली' में शामिल रचनाओं से जोड़ते हैं। कई विद्वान इसे मासिक मैगज़ीन 'प्रीतलड़ी' में प्रकाशित होते छोटे-छोटे संस्मरणों के अलावा जसवन्त सिंह कंवल की पुस्तक 'जीवन कनियाँ' (1944) और श्री बिशन सिंह उपासक की पुस्तक 'चोभा' (1956) में भी तलाशते हैं। लेकिन 1970 के बाद ही पंजाबी साहित्य में 'मिन्नी' (MINNI) शब्द का प्रयोग हुआ।

मशीनी युग की शुरुआत ने जहाँ मनुष्य के कार्य को प्रभावित किया, वहीं साहित्य में नये रूपों का आगमन भी हुआ। जब हम 'मिन्नी कहानी' के बारे में पढ़ते हैं तो 1970 से पहले भी छोटे आकार की रचनाएँ मिलती हैं, लेकिन वे 'मिन्नी कहानी' के नाम से नहीं लिखी गई थीं। डॉ. हरप्रीत सिंह राणा ने अपने शोध कार्य के दौरान नई दिल्ली से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'आरसी' के अप्रैल 1970 अंक में प्रीतम सिंह पंछी की तीन मिन्नी कहानियों के प्रकाशन को अंकित किया है। मौलिक कृतियों में, सतवंत कैंथ लिखित 'बर्फी दा टुकड़ा' (1972) पंजाबी में पहला मिन्नी कहानी संग्रह है, लेकिन कुछ आलोचक जान-बूझकर इसे अनदेखा करते हैं। यह एक अलग बहस हो सकती है कि इस पुस्तक की रचनाएँ विधा के मानदंडों पर खरा उतरती हैं या नहीं। इस दौरान कई अन्य लेखकों के भी संग्रह प्रकाशित हुए, लेकिन उनमें से ज्यादातर खुद को 'पितामह' कहलाने के चक्कर में ही फँसे रहे। इसीप्रकार, इस अवधि के दौरान गुरपाल लिट और सुरिंदर कैले द्वारा संपादित पत्रिका 'अणु रूप' में मिन्नी कहानियाँ भी प्रकाशित हुईं। इसके बाद 1973 में रोशन फूलवी और ओम प्रकाश गैसो द्वारा संपादित मिन्नी कहानी संग्रह 'तरकश' इस विधा के लिए मील का पत्थर माना जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पंजाबी लघुकथा का नामकरण 20वीं सदी के आठवें दशक में हुआ। मार्च 1982 में डॉ. अमर कोमल ने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की 'शोध पत्रिका' के 'गल्प विशेषांक-19' में 'पंजाबी कहानी दा नवां रूप : मिनी कहानी' शीर्षक से एक लेख लिखकर साहित्यिक जगत में 'मिन्नी कहानी' के अस्तित्व पर प्रकाश डाला। वहीं पर 1988 में डॉ. महताब-उद-दीन ने मिन्नी कहानी पर आलोचना की पहली पुस्तक 'पंजाबी मिन्नी कहानी : प्राप्तियां एते सम्भावनावां ' प्रकाशित करवाकर इसकी स्थापना का मार्ग आसान कर दिया। इस अवधि में कई लेखकों के मौलिक एवं संपादित संग्रह प्रकाशित हुए। जिससे यह विधा धीरे-धीरे साहित्यिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने लगी। कई लेखक इस क्षेत्र के प्रति समर्पित रहे हैं। इस दौरान कई सतही स्तर के काम भी सामने आये।

किसी ने एक दिन में दस लघुकथाएँ लिखने का दावा किया, किसी ने एक बिंदु तक को लघुकथा बनाने का प्रयास किया। किसी ने प्रवचनों की भाँति एक-दो पंक्तियों में कुछ चमत्कारी बातें लिखकर इसे सनसनीखेज बनाना चाहा । ऐसे लेखक जितनी जल्दी इस विधा में आये, उतनी ही जल्दी उन्होंने इसे छोड़ भी दिया। लेकिन कुछ समर्पित और प्रतिबद्ध लेखक ऐसे भी थे, जिन्होंने न केवल इस विधा को स्थापित करने के लिए कदम से कदम मिलाकर काम किया, बल्कि मिशनरी भावना के साथ पंजाब के कोने-कोने में जाकर इसके लिए काम किया; विचार, चर्चायें कीं। जिसका परिणाम यह है कि आज पाँच दशक बाद जब देखते हैं तो यह साहित्यिक क्षेत्र में एक विधा के रूप में न केवल स्थापित हो चुकी है, बल्कि लोकप्रियता भी प्राप्त कर चुकी है।

पंजाबी मिन्नी कहानी के विकास और स्थापना में विभिन्न विद्वान लेखकों, लेखक मंचों, साहित्यिक संगठनों और अन्य संस्थाओं का योगदान सराहनीय है; लेकिन पिछले 37 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही त्रैमासिक 'मिन्नी' ने इसे नई दिशा और दशा प्रदान की और इसे वैश्विक पहचान दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाई। वर्ष 1988 में 'मिन्नी' पत्रिका का शुभारंभ पंजाबी लघुकथा के क्षेत्र में इस विधा के विकास के लिए एक शुभ संकेत साबित हुआ। डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति और श्री श्याम सुंदर अग्रवाल ने निरोल मिन्नी कहानी की इस त्रैमासिक पत्रिका 'मिन्नी' का प्रकाशन शुरू किया जो आज तक निर्बाध रूप से जारी है। वर्तमान समय में इसका संपादन कार्य इन पंक्तियों के लेखक जगदीश राय कुलरियाँ पंजाबी मिन्नी कहानी के सशक्त कथाकार कुलविंदर कौशल के साथ संभाल रहे हैं। त्रैमासिक 'मिन्नी' हिन्दी सहित भारत की किसी भी भाषा में प्रकाशित होने वाली लघुकथा साहित्य की एकमात्र पत्रिका है, जो लगातार 37वें वर्ष में सफलता से प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त इस विधा की कई और पत्रिकाएँ 'खुशबू', 'सतिसागर', 'हर्फ़', 'मिन्नी कहानी', 'विधा' आदि प्रकाशित होती रही हैं। फिलहाल 'मिन्नी' के अलावा 'छिन' (त्रिपत भट्टी, डॉ. हरप्रीत सिंह राणा और दविंदर पटियालवी द्वारा संपादित) लगातार प्रकाशित हो रही है। सुरिंदर कैले के संपादन में प्रकाशित 'अणु' (लघु रचनाओं की पत्रिका) जिसमें लघुकथा को अन्य विधाओं के बीच प्रमुखता दी जाती है, पिछले पाँच दशकों से इस विधा में सक्रिय है।

मिन्नी कहानी विधा के शुरुआती लेखकों रोशन फूलवी, सतवंत कैंथ, हरभजन सिंह खेमकरणी, अनवंत कौर, शरण मक्कड़, सुलखन मीत, निरंजन बोहा, डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति, जगरूप दातेवास, हरनेक सिंह कैले, दर्शन मितवा, जसबीर ढंड, श्याम सुंदर अग्रवाल, मोहन शर्मा, सुरिंदर कैले, डॉ. जोगिंदर सिंह निराला, अवल सरहदी, जगदीश अरमानी, राजिंदर कौर वंता, दर्शन धंजल, रंजीत कोमल, पांधी ननकानवी, भूपिंदर सिंह पीसीएस, दलीप सिंह भूपाल, इकबाल दीप, धर्मपाल साहिल, करमवीर सिंह सूरी, बिक्रमजीत नूर, डॉ. अमर कोमल, सुखमिंदर सेखों, त्रिपत भट्टी, प्रीत नीतपुर, मीत खटड़ा, प्रो. हरनेक सिंह कोमल, बलबीर परवाना, गुरचरण चौहान आदि ने इस विधा में रचनात्मक योगदान देने के साथ-साथ इसके विकास के लिए भी काम किया। इसके बाद डॉ. नायब सिंह मंडेर, डॉ. हरप्रीत सिंह राणा, सुरिंदर मकसूदपुरी, सुखदेव सिंह शांत, रघबीर सिंह मेहमी, जगदीश राय कुलरियां, डॉ. करमजीत सिंह नडाला, मंगत कुलजिंद, दर्शन सिंह बरेटा, भीम सिंह गरचा, रणजीत आजाद कांझला, कुलविंदर कौशल, राजदेव कौर सिद्धू, दविंदर पटियालवी, परगट सिंह जंबर, साधुराम लंगेआना, जसवीर भलुरिया, सुरजीत सिंह जीत, बाज सिंह महलियां, गुरुमीत सिंह फाजिल्का, डॉ. हरनेक सिंह कलेर, सुखदर्शन गर्ग, बलराज कुहाडा , डॉ. हेम

किरण जैसे लेखकों ने इस विधा को स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत की। इनके अलावा बीर इंदर बनभौरी, गुरसेवक सिंह रोडकी, गुरप्रीत कौर, परमजीत कौर शेखूपुर कलां, बिंदर सिंह खुड्डी कलां , सोमा कलसियां, बूटा खान सुखी, सीमा वर्मा, सुरिंदरदीप, गुरुमीत सिंह मराड़, , कैलाश ठाकुर, गुरजीत कौर अजनाला, सुखविंदर दानगढ़ , मालविंदर शायर, गुरुमीत रामपुरी, भूपिंदर सिंह मान, अमरजीत कौर हरड, कुलविंदर कुमार, बलजीत कौर, मंजीत कौर सिद्धू रत्नगढ़, बलविंदर हुकमावली, इकबाल सिंह हमज़ापुर, मीना नवीन आदि लेखक भी इस विधा में सक्रिय है।

'लघुकथा' साहित्य की वह विधा है जो न केवल कम शब्दों में बड़ा अर्थ देती है बल्कि पाठक के सोचने-समझने के लिए बहुत कुछ अनकहा भी छोड़ जाती है। मानव जीवन की जो सूक्ष्म घटनाएँ कभी-कभी बड़ी रचनाओं में गौण रह जाती हैं, उन सूक्ष्म अनुभूतियों, परिघटनों, झलकियों को लघुकथा अपने कलेवर में समेटती हैं। मुख्य रूप से लघुकथा पल-क्षण के प्रकरण को पकड़ने की कोशिश करती है और इकहरी घटना को रूपमान करती है। लघुकथा में लेखक को घटना के चयन के समय बहुत सतर्क रहने की आवश्यक्ता है। यदि घटना का चयन सही हो तो रचना सुन्दर हो जाती है, अन्यथा उसकी गिनती कहीं नहीं होती। इसीलिए लघुकथाओं के नाम से प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ केवल 'लघु रचनाएँ' बनकर रह जाती हैं।

विभिन्न चर्चाओं में इस बात को बल मिला है कि लघुकथा में सब-कुछ कहने के स्थान पर जो अनकहा है, वह अधिक महत्वपूर्ण है। इस विधा में इसके नाम के दोनों गुण, अर्थात् रचना लघु हो और उसमें कहानी भी जरूर हो, होने चाहिए। लघुकथा अनावश्यक विस्तार और निरर्थक शब्दों की अनुमति नहीं देती है। इसमें डाला गया एक भी अतिरिक्त शब्द खटकता है। यह कहानी का सारांश नहीं है।

प्रो सतिंदर सपड़ा का मानना है, "दरअसल पहले कहानी पैदा हुई, फिर उपन्यास और उसी उपन्यास ने कहानी के चेहरे और माथे को सँवारा जिससे (छोटी कहानी) कथा का जन्म हुआ और उसका सँवारा, तराशा रूप 'मिन्नी कहानी' है। परिवर्तन और निखार समय का संदेशा है, एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका समय की कमी से कोई लेना-देना नहीं है।"

('मिन्नी कहानी : सरूप, सिद्धांत ते विकास', करमवीर सिंह सूरी, पृष्ठ:10)

डॉ. प्रदीप कौड़ा के अनुसार, "मिन्नी कहानी लिखना फूल से पत्थर काटने जैसा है।"

डॉ. रविंदर सिंह संधू लिखते हैं कि "सहज से आकाश से गिरती मध्यम आकार की बूँदें ही पानी की सतह पर बताशे बनाती हैं। बताशे बनाने का ये हुनर न तो भारी बारिश में है और न ही धीरे-धीरे गिरती बूँदों में। बस पानी पर बताशे बनाने जैसी विधा है मिन्नी कहानी।

('नुक्ता निगाह'—प्रोफेसर गुरदीप सिंह, पृष्ठ:48)

इसी प्रकार डॉ. हरप्रीत सिंह राणा के पीएच.डी. थीसिस में उल्लिखित अन्य परिभाषाओं के अलावा, इस विधा को समझने के लिए ये तीन परिभाषाएँ भी महत्वपूर्ण हैं : "एक मिन्नी कहानी की गति और प्रवाह एक पहाड़ी झरने या बरसाती नदी की तरह है। विस्तार की कोई गुंजाइश नहीं है। विस्तार तो कहानी के लिए भी बुरा है, लेकिन मिन्नी कहानी के लिए यह बिल्कुल हत्यारा है। मिन्नी कहानी एक वाक्य तो क्या, एक शब्द का अतिरिक्त भार भी सहन नहीं कर सकती। वह मिन्नी कहानी सफल मानी जाएगी, जिसकी सरंचना एक शब्द हटाने से भी टूट जाए।" *(जगदीश अरमानी)*

'मिन्नी' का अर्थ आकार से है, कहानी वह है जिसमें कहानी के तत्व या रस हों। एक मिन्नी कहानी वह हो सकती है जो केवल एक क्षण या पल को ही अपने में कैद कर लेती है और उसे एक कहानी बनाने के लिए कलात्मक तरीके से प्रस्तुत करती है। *(डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति)*

एक मिन्नी कहानी का उद्देश्य व्याख्या करना नहीं है, इसका उद्देश्य हलचल पैदा करना है। इसमें कहे से ज्यादा महत्व अनकहे का होता है और व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करने पर वह गूँजता है। स्थिति के विस्तार में न जाकर, स्थिति की परत की ओर इशारा कर, बाकी सब पाठक की कल्पना से भरने के लिए छोड़ देने से, पाठक रचनात्मक प्रक्रिया का एक सक्रिय हिस्सा बन जाता है। जो मानवीय पीड़ा में भागीदार होने से रचना का अधिक आनंद लेता है।" *(डॉ. टी. आर. विनोद)*

जब लघुकथा विधा की आलोचना की बात आती है तो आरम्भिक काल में इसके लेखकों ने ही इसकी आलोचना का दायित्व सँभाला था। उस दौर में डॉ. अनूप सिंह जैसे निरोल आलोचकों ने भी इस विधा पर ध्यान दिया। उनकी दो आलोचना पुस्तकें—'मिन्नी कहानी : सीमा ते संभावनवाँ' और 'मिन्नी कहानी : विकास पडाय' उस समय लोकप्रिय रहीं। बाद में उनकी एक और आलोचनात्मक पुस्तक 'मिन्नी कहानी लेखका नाल खरियां-खरियां' भी प्रकाशित हुई। डॉ. कुलदीप सिंह दीप, डॉ. रविंदर संधू, प्रो. गुरदीप सिंह, डॉ. प्रदीप कौडा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. बलजीत कौर रियाड़, डॉ. नायब सिंह मंडेर, डॉ. हरप्रीत सिंह राणा, जगदीश राय कुलरियां, डॉ. दीपा कुमार, डॉ. गुरप्रीत सिंह, प्रो.सरदूल सिंह औजला, भूपिंदर सिंह जस्सल, मक्खन सिंह आदि ने भी इस विधा के आलोचनात्मक कार्यों में भाग लिया।

पंजाबी मिन्नी कहानी पर पहला पीएच.डी. शोध-कार्य श्री नायब सिंह मंडेर द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से किया गया, जिससे इस विधा के लिए शैक्षणिक क्षेत्र में शोध का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने अपनी ऍम.फिल. भी उसी विश्वविद्यालय से की थी। पटियाला के हरप्रीत सिंह राणा द्वारा महर्षि मार्कंडेश्वर विश्वविद्यालय, मौलाना (अंबाला) से एम.फिल. कर पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से पीएच.डी. का शोध कार्य पूरा किया। इसके साथ ही रमनदीप कौर ने कर्मवीर सिंह सूरी की मिन्नी कहानियों पर शोध कार्य पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से, जगजीत सिंह ने कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से और दविंदर सिंह पनेसर ने दिल्ली यूनिवर्सिटी से एम.फिल. का शोध कार्य किया गया है। इन पंक्तियों के लेखक जगदीश राय कुलरियां द्वारा हिन्दी में 'पंजाबी और हिन्दी लघुकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया गया है। डॉ. नायब सिंह मंडेर और डॉ. हरप्रीत सिंह राणा के बाद तीसरी पीएच.डी. दविंदर सिंह पनेसर दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली से कर रहे हैं। डॉ. जोगिंदर सिंह निराला ने पंजाबी कहानी पर अपने शोध के दौरान इस विधा पर भी ध्यान दिया है।

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से कर्मवीर सिंह सूरी द्वारा लिखित आलोचना पुस्तक 'मिन्नी कहानी : सरूप, सिद्धांत ते विकास', भाषा विभाग पंजाब की तरफ से 'मिन्नी कहानी : निकास ते विकास' (कर्मवीर सिंह सूरी), पंजाबी साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ (संरक्षक: पंजाब कला परिषद) द्वारा 'कुज्जे विच समुद्र' (मिन्नी कहानी संग्रह) सं: डॉ. सरबजीत कौर सोहल पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। भाषा विभाग, पंजाब ने जन साहित्य पत्रिका के दो लघुकथा विशेषांक और पत्रिका 'पंजाबी दुनियां' का आलोचना विशेषांक भी प्रकाशित किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली ने 2023 में मिन्नी कहानी विधा को पाठ्यक्रम (कक्षा बी.ए सेमेस्टर-6) में शामिल करने की पहल की। जिसमें 36 लेखकों की मिन्नी कहानियाँ शामिल हैं। हाल ही में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ने पंजाबी मिन्नी कहानी को एम.ए. पंजाबी के तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया है। इसमें तीन संपादित पुस्तकें हैं—'वीहवी सदी : पंजाबी मिन्नी कहानी' (संपादक: डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति, श्याम सुंदर अग्रवाल और बिक्रमजीत नूर) 'कुज्जे विच समुद्र' (संपादक : डॉ. सरबजीत कौर सोहल) और 'मिन्नी कथावां दे अंग संग' ' (संपादक: डॉ. कुलदीप सिंह) को शामिल किया गया है।